फरवरी 2005 में कार निकोबार द्वीप के मुस गांव में एक राहत शिविर में राशन मिलने का इंतजार करता एक किशोर।

निकोबार में सीखे जिंदगी के सबक

लेख और फोटोग्राफ: नीलेश मिश्र

कई बार ऐसे क्षणों में हमें जिंदगी के सबक सीखने का मौका मिलता है जिनकी हम पहले कल्पना भी नहीं कर सकते। मैंने ऐसा ही एक सबक कागज के एक पन्ने से तब सीखा जब मैं दिसंबर 2004 की सुनामी के लगभग दो माह बाद अंडमान और कार निकोबार द्वीप समूह के अस्थायी राहत शिविर में था। संबंधित अधिकारी ने जीवित बचे लोगों से अपने नुकसान की सूची बनाने को कहा। मुख्य भूमि से आकर वहां बसे हजारों लोगों ने अपने घरों, मोटर साइकिलों, नकदी और जेवरों का ब्यौरा तैयार कर दिया। लेकिन, निकोबार के छोटे-से द्वीप कमोर्टा के उस आदिवासी के पास इनमें से कोई भी चीज नहीं थी। उसने अपने नुकसान के ऐवज में बस इतना लिखा: ''तीन सुअर, एक कुत्ता।'' अपने प्रिय पालतू पशुओं के अलावा उसे किसी दूसरी चीज की चिंता नहीं थी।

जिस आदमी ने अपने गांव और द्वीप में मौत की उस विनाशलीला के हृदय विदारक दृश्य देखे थे, उसकी बात में जीवन का मर्म छिपा हुआ था कि नुकसान को किस नजर से देखा जाना चाहिए। मुझे इससे बहुत बड़ी सीख मिली, मन में शांति अनुभव की और कुछ समय के लिए वेतन बढ़ने या अपनी अगली

बिल्कुल ऊपर: कार निकोबार द्वीप पर एक तटीय गांव मलक्का में महात्मा गांधी की मूर्ति के अलावा सब कुछ नष्ट हो गया।
ऊपर: कार निकोबार के मुस गांव के इस दंपत्ति ने आपदा में अपना सब कुछ खो दिया। इन्हें फरवरी 2005 में राहत शिविर का काम कर रहे एक अस्पताल में शरण लेनी पड़ी। यह अस्पताल जॉन रिचर्डसन चर्च परिसर में था।

किताब की चिंता भी दूर हो गई। लेकिन तभी तक, जब तक नई दिल्ली की उस आपाधापी ने मुझे फिर से अपने शिकंजे में नहीं दबोच लिया। मैं फिर से अंडमान जाने के मौके का इंतजार करने लगा ताकि मन की थोड़ी शांति और बटोर सकूं।

हां, मन की शांति। 2005 में उस दिन मुझे लगा कि निकोबार के निवासियों के पास यह दुर्लभ दौलत है और इसी से वे कुदरत की मार को झेलने में समर्थ हुए हैं। लगभग 8290 वर्ग किलोमीटर में शानदार समुद्रतटों, साफ नीले जल और सघन वनों से सजे-धजे, यहां-वहां बिखरे उन 572 खूबसूरत द्वीपों में हजारों लोग मौत के मुंह में पहुंच चुके थे। दूर-दूर तक फैली कोरल भित्तियां और हरे-भरे पेड़ उजड़ चुके थे। निकोबार निवासियों की संस्कृति और अर्थव्यवस्था का आधार- 1,57,000 से अधिक गोपशु तथा 38,000 सुअर समाप्त हो गए थे। लगभग 11,000 हैक्टेयर में फैली धान की फसल और नारियल के बागान नष्ट हो चुके थे जो वहां के कुल बागानी इलाके का पांच फीसदी हिस्सा था। लगभग 10,000 मकान, 85 स्कूल, 34 चिकित्सा केंद्र, 20 पावर हाउस और 24 जेटी तहस-नहस हो गईं। द्वीप विभाजित हो गए, तिरछे हो गए।

कई और तरह का भी नुकसान हुआ जिसने बहुत गहरा असर डाला। निकोबार में आदिवासियों की संख्या 40,000 है जो पहले आत्मा पर विश्वास करते थे। उनमें से ज्यादातर ने ईसाई धर्म अपना लिया। वे सभी प्रकृति, हवा और समुद्र की पूजा करते हैं और पहेलियों, पौराणिक कथाओं तथा लोक कथाओं के माध्यम से अपने रीति-रिवाजों को पीढ़ी-दर पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं। मानव विज्ञानी एस. बारी मुझे बताते हैं कि सुनामी में जो भी निकोबार निवासी मारा गया वह ''चलती-फिरती किताब था।'' और, सबसे बड़ी बात यह कि जो निकोबारी लोग सदियों से सागरतट पर रहते थे उन्हें अपना प्यारा सागर छोड़कर उससे दूर अंदरुनी इलाके में नए गांव बनाने पड़े।

अपनी सदियों पुरानी आदत के अनुसार निकोबार के निवासियों ने निरपेक्ष भाव से प्रकृति के कोप का सामना किया। अंडमान द्वीपसमूहों में मैं महीनों रहा और सुनामी की त्रासदी के तुरंत बाद कई सप्ताहों तक उस विनाशलीला को देखा। उसके बाद भी पुनर्वास प्रबंध की ताजा खबरों के लिए मैं कई बार वहां जाता रहा। भारत के दूसरे भागों और अन्य एशियाई देशों के लिए सुनामी एक भीषण त्रासदी, मृत्यु, विनाश और निराशा की तस्वीर थी। लेकिन, निकोबारी लोगों के लिए वह साहस और आशा, बेहतर आपसी संबंध, विकराल विपदाओं का सामूहिक रूप से सामना करने और अपने परंपरागत ज्ञान तथा कौशल के बलबूते पर अपने घरों व गांवों को भावी आपदाओं से बचाने के प्रयासों की महागाथा थी। निरंतर बढ़ती हुई प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए जैसे यह निकोबारी लोगों की ओर से एक सबक था।

द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर के राहत शिविरों में अंतर साफ दिखाई देता था। मुख्य भूमि से आए हुए लोगों के शिविरों में निराशा और विषाद की छाया और उन द्वीपों से भाग जाने का आतंक दिखाई देता था। लेकिन, निकोबारी लोगों के शिविरों में उत्सव का वातावरण था: उनके यहां हर शाम प्रार्थना सभाएं होतीं और भजन गाए जाते। वे आपस में बातें करके एक-दूसरे का साहस बढ़ाते और उनके बड़े बुजुर्ग घरों के ऐसे नई डिजाइनों पर काम करते जो लहरों के प्रकोप को झेल सकें।

कार-निकोबार द्वीप में जब राहत पहुंचाने वाली एक संस्था ने निकोबार निवासी बड़े बुजुर्गों को एक अनाथालय के लिए आर्थिक मदद देने की बात की तो यह जान कर चकित रह गए कि निकोबारी भाषा में 'अनाथ' या 'विधवा' जैसे शब्द ही नहीं हैं। उन्होंने राहत कर्मियों को बताया कि वे स्वयं ही सबकी

राहत में सहभागी

भारत के जिन नगरों ने सुनामी की विनाशलीला झेली और अमेरिका के जो शहर प्राकृतिक विपदाओं से उबरे हैं उनके बीच सहभागिता की एक नई शुरूआत हुई है। 'द इंटरनेशनल सिटी/काउंटी मैनेजर्स एसोसिएशन ने तमिलनाडु के कड्डालौर तथा नागपट्टिनम और फ्लोरिडा (अमेरिका) के हरीकेन की तबाही से उबरे पाम बे तथा पोर्ट ऑरेंज शहरों के बीच प्रशासन के हाथ मजबूत करने के लिए 19.8 लाख डालर की सहायता दी है।

इसके अलावा सुनामी से प्रभावित दक्षिण भारत के तटीय इलाकों में अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी यू एस एड भी दिसंबर 2004 से ही लोगों की मदद कर रही है। एजेंसी ने 42.8 लाख डॉलर की तात्कालिक सहायता प्रदान की और 136.8 लाख डॉलर की राशि वहां कार्यरत ऐसे समूहों को दी जो अपशिष्ट प्रबंधन, सफाई तथा पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था, अस्थायी घरों के निर्माण, देखभाल केंद्रों के संचालन, परामर्श सेवा, प्रशिक्षण तथा उद्यम शुरू करने के लिए सलाह देने जैसे कार्य कर रहे हैं।

साथ ही, 'काम करो, धन पाओ' कार्यक्रमों के तहत हजारों जरूरतमंद परिवारों को मदद दी गई है ताकि उनकी दैनिक जरूरतें पूरी हो सकें और वे फिर से सामान्य जीवन जी सकें।

सुनामी की तबाही के बाद 18 महीनों के दौरान यू एस एड तथा इसकी सहयोगी संस्थाओं ने 4,294 परिवारों के लिए अस्थायी घरों की व्यवस्था की है, 1,15,600 परिवारों तक पीने के स्वच्छ पानी और सफाई की सुविधाएं पहुंचाई हैं, 150 स्वयंसेवी समूहों को व्यापार प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया है और आपदा प्रबंधन के लिए 12,249 समितियां बनाई हैं। यू एस एड से प्राप्त 136.8 लाख डॉलर की राहत राशि निम्न कार्यों के लिए दी गई है:

- 6,73,375 डॉलर 'केयर' संस्था को पीने के पानी तथा सामुदायिक शौचालयों सहित सफाई की परियोजनाओं के लिए।
- 2,00,000 डॉलर संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू एन डी पी) के तहत मनोसामाजिक परामर्श के लिए।
- 50 लाख डालर संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के तहत तमिलनाडु के 20 जिलों में आपदा जोखिम प्रबंधन की विधियों को सामान्य जीवन का हिस्सा बनाने और सरकारी कार्रवाई के लिए।
- 5,11,500 डॉलर अंतरराष्ट्रीय संस्था 'एक्टेड' के तहत स्वयंसेवी समूहों को पुन: आजीविका के साधनों की व्यवस्था करने के लिए।
- 48,78,600 डॉलर कैथोलिक रिलीफ सर्विसेज (सी आर एस) के लिए पीने के पानी, सफाई, स्वास्थ्य तथा घरों के निर्माण और मानव तस्करी रोकने के क्रम में युवकों तथा महिलाओं की सहायता हेतु।
- 24,01,560 डॉलर प्रॉजेक्ट कंसर्न इंटरनेशनल के तहत सुनामी प्रभावित अन्य क्षेत्रों में पीने के पानी, सफाई, घरों के निर्माण, बच्चों की देखभाल तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका के साधन जुटाने तथा मानव तस्करी रोकने के लिए।
- 7,07,200 डॉलर एक्जनोरा इंटरनेशनल के तहत कारगर अपशिष्ट प्रबंधन तथा सामुदायिक संस्था विकास परियोजना के लिए।

– ए. वी. एन.

तमिलनाडु के देवनामपट्टिनम, कड्डालोर में पांडिचेरी मल्टीपरपज सोशल सर्विस सोसायटी द्वारा संचालित सिलाई केंद्र। इसे यूएसएड और सीआरएस की मदद से आजीविका कार्यक्रम के तहत चलाया जा रहा है।

फोटो: हेमंत मदनागर

देखभाल कर लेंगे।

इंजीनियर से नौकरशाह बने विवेक पोरवाल ने वर्ष 2005 की शरद ऋतु में सुनामी की विनाशलीला के बाद निकोबार द्वीप समूह में सेवा करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने 26,000 निकोबारी आदिवासियों तथा अन्य निवासियों का सर्वेक्षण कराया जो सुनामी प्रभावित किसी भी क्षेत्र में इस आपदा से उत्पन्न मानसिक आघात का सबसे बड़ा सर्वेक्षण था। मैंने जो कुछ शिविरों में देखा था, पोरवाल को उसके और भी अधिक प्रमाण मिल गए: निकोबार निवासी उस भयंकर आपदा के मानसिक आघात से तेजी से उबर चुके थे। मुख्य भूमि से आए निवासियों के विपरीत निकोबार निवासियों में गहरी मनोवैज्ञानिक व्यथा के लक्षण नहीं पाए गए। तब पोरवाल ने मुझे बताया: ''गैर आदिवासियों में तनाव के लक्षण अधिक पाए गए जो हो सकता है उनके भौतिक सोच या आदिवासियों के विपरीत उनमें सामाजिक सहयोग की कमी तथा उनके धार्मिक विश्वासों के कारण हों।''

नई दिल्ली के यातायात के कोलाहल, शोर भरे रात्रिभोजों या जब दिमाग सोचने को तैयार न हो तो उन क्षणों में छोटी-छोटी समस्याओं का भी हल समझ में नहीं आता। तब अंडमान में देखे कई चेहरे मेरी आंखों के सामने कौंध जाते हैं। जैसे सुनामी रॉय नाम का वह शिशु जिसका जन्म सुनामी की तबाही के तुरंत बाद जंगल में हुआ। डॉक्टरों का कहना था कि प्रसव में हुई परेशानियों के कारण जच्चा-बच्चा दोनों का बचना कतई संभव नहीं था। माइकल मंगल, जो अपने द्वीप में बाकी सभी लोगों के मारे जाने के कारण 25 दिन तक बिल्कुल अकेला रह गया था और केवल वर्षा के पानी तथा नारियलों पर जीवित रहा। कोशी मैकेनरो जॉन नामक किशोर जिसने मौत का मंजर बने अपने डूबे हुए द्वीप को बचाने के लिए मदद की, आशा में कई भावुक पत्र लिखे जिनके बारे में उसे यह भी पता नहीं था कि वे किसी को मिलेंगे भी या नहीं। जेरेमिया, जिसने अपने डूबते हुए आठ माह के बेटे माइकल के पैर का पंजा थाम कर विनाशकारी लहरों का सामना किया और उसकी जान बचा ली।

अंडमान के जाने-माने गैर सरकारी और सक्रिय कार्यकर्त्ता समीर आचार्य ने निकोबार निवासियों के बारे में मेरी जानकारी बढ़ाई। उन्होंने ऐसे कुछ युवकों के बारे में मुझे बताया जो कभी पड़ोस में रहते थे। एक दिन उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था। उन्होंने हताश होने के बजाय आटे के खाली कनिस्तर पकड़े और उन्हें बजाते हुए तत्काल भूख पर एक गीत रच डाला।

मेरे पास न तो सूफी सोच है, न दृढ़ संकल्प शक्ति और न उस भिक्षु की तरह मानसिक शांति जो दुनिया भर में घूमता है फिर भी उससे उसका कोई नाता नहीं रहता। मुझे नहीं मालूम कि हमारी नजर में जो जीवन के लिए जरूरी है उसे त्यागने का परमानंद कैसे प्राप्त किया जा सकता है और न मेरे पास लालसा और लालच के बंधन से मुक्त होने की शक्ति है।

लेकिन, मैं इस बारे में सोच रहा हूं। शायद मुझे फिर अंडमान जाना पड़ेगा। □

***नीलेश मिश्र** पत्रकार, लेखक और गीतकार हैं। वह नई दिल्ली में रहते हैं।*